सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-28 अंक-19 7 से 21 अक्तूबर, 2013 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

समाज पर जब कभी संकट आया, छात्रों ने ही डट कर मुकाबला किया है

(भोपाल में एआईडीएसओ के 8वें अखिल भारतीय सम्मेलन में खुले अधिवेशन के मुख्य वक्ता कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती, एसयूसीआई (सी) के पोलिट ब्यूरो सदस्य द्वारा दिए गए भाषण के कुछ अंश)

— कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती

शुरूआत में कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती ने कहा: समाज पर जब कभी संकट आया ये छात्र ही हैं जिन्होंने डट कर खड़ा होने का साहस किया है। मेरा मानना है कि हमारे समाज की ऐसी एक जरूरत ने आपको यह चुनौती स्वीकारने के लिए प्रेरित किया है जो हमारे देश की मौजूदा संकटग्रस्त पूँजीवादी व्यवस्था ने आपके सामने पेश की है।

पूँजीवादी समाज आज पूरी तरह ह्रासोन्मुखी हो गया है। यह चौतरफा संकट से घिरा हुआ है जो घोर सांस्कृतिक पतन ला रहा है। युवाओं का एक तबका इसका शिकार बन रहा है। लगातार हर घड़ी महिलाओं की मर्यादा और सम्मान तार-तार किया जा रहा है। इन अपराधों को अंजाम देने वाले और कहीं से नहीं बल्कि समाज के परिवारों से ही आते हैं। खुद समाज ने ही उनमें इन पाश्विक प्रवृत्तियों को जन्म दिया है।

शिक्षा का निजीकरण-व्यापारीकरण सरकार द्वारा किए जा रहे हमलों में से सबसे भयंकर है। केन्द्र सरकार द्वारा लागू की जा रही नीतियों ने यह बदतरीन किस्म का हमला बोला है: इन नीतियों ने शिक्षा के क्षेत्र को भारतीय तथा विदेशी दोनों कॉरपोरेट घरानों की पूँजी के लिए बेरोकटोक अधिकतम मुनाफा कमाने की शिकारगाह में बदल दिया है। शिक्षा को बहुत महंगा बना दिया गया है। और इस प्रकार इसे आम आदमी की पहुँच से दूर कर दिया गया है।

कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती ने आगे कहा: शिक्षा मनुष्य का चरित्र निर्माण करती है; यह ज्ञान पैदा करती है। मनुष्य उसे ही कहा जाता है जो सोचने और प्रकृति, समाज तथा जीवन की सच्चाई का पता लगाने और विश्लेषण करने की क्षमता का धनी होने के साथ साथ जो सामाजिक भलाई और न्याय की खातिर संघर्ष करने के लिए सांस्कृतिक-नीति-नैतिकता के उच्च मान का

(शेष पृष्ठ 2 पर)

पेन्शन बिल पूरी तरह से मजदूर-विरोधी — एआईयूटीयूसी

4 सितम्बर को लोकसभा में पारित पेन्शन फण्ड रेगुलेटरी एण्ड डेवलेपमैण्ट अॅथोरिटी बिल पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए एआईयूटीयूसी के महासचिव कॉमरेड शंकर साहा ने निम्नलिखित प्रेस विज्ञप्ति जारी की :

कांग्रेस-नीत यूपीए सरकार ने बीजेपी के समर्थन से 4 सितम्बर को जो पेन्शन बिल पारित कराया है, वह देशी-विदेशी पूँजी के स्वार्थ में भूमण्डलीकरण की आर्थिक नीति लागू करने की जो धारा चल रही है, उसी की निरन्तरता में लाया गया है। सरकारी कर्मचारियों ने लम्बे संघर्ष के जरिये सामाजिक सुरक्षा के जिस सबसे शक्तिशाली अधिकार को हासिल किया था, इस बिल के जरिये उसे छीन लिया गया है। यह बिल न केवल पूरी तरह से मजदूर-विरोधी है बल्कि आजादी के बाद भारत में पारित सबसे कठोर काले कानून के रूप में इसे चिन्हित किया जाएगा।

इस कानून के फलस्वरूप श्रमिकों को खुद के पैसों से पेन्शन खरीदनी पड़ेगी और इसके बावजूद हर महीने निश्चित राशि की पेन्शन पाने का अधिकार नहीं रहेगा। पेन्शन फण्ड के पैसों को सट्टा बाजार में निवेशित किये जाने के कारण श्रमिकों के भयंकर दुर्दशा में पड़ जाने की जो आशंका व्यक्त की गई है वह वास्तविक है। क्योंकि अमेरिका और यूरोप के बहुत से देशों में अनेक कारपोरेट घरानों के दिवालिया हो जाने के अनगिनत उदाहरण मौजूद हैं।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

सरकार की मजदूर-विरोधी नीतियों के खिलाफ सड़कों पर उतरे दिल्ली के मजदूर-कर्मचारी

नई दिल्ली : सरकार की मजदूर-विरोधी नीतियों के खिलाफ दिल्ली में 25 सितम्बर को केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों के संयुक्त आह्वान पर देश भर में विरोध प्रदर्शन, कन्वेन्शन व सभाएं वगैरह की गई। दिल्ली में इस दिन आईटीओ पर मजदूरों का विरोध प्रदर्शन हुआ जिसे अन्य मजदूर नेताओं के अलावा एआईयूटीयूसी के सचिवमण्डल सदस्य कॉमरड आर के शर्मा ने भी सम्बोधित किया।

केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों ने महंगाई कम करने, न्यूनतम वेतन 10 हजार करने, ठेका प्रथा पर रोक लगाने, स्थाई काम-स्थाई रोजगार व समान काम-समान वेतन देने, सभी के लिए सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के विनिवेश पर रोक लगाने, श्रम कानूनों को सख्ती से लागू करने, 45 दिन में यूनियन रजिस्ट्रेशन करने आदि मांगें उठायी। श्रमिक नेताओं ने इन मांगों को लेकर आगामी 12 दिसम्बर को संसद मार्च सफल करने का मजदूर-कर्मचारियों से आह्वान किया।

कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती का भाषण...

(पृष्ठ 1 का शेष)

अधिकारी हो। लेकिन पूँजीवाद ऐसी एक शिक्षा से खौफजदा है जो इन्सान बनाती है। इस पूँजीवादी व्यवस्था में शिक्षा केवल सूचना देने और संग्रह करने के लिए दी जाती है। इस प्रकार चिन्तन की क्षमता का गला घोंटा जा रहा है। सूचनामूलक ज्ञान वस्तु जगत के बारे में सही और समग्र ज्ञान प्रदान नहीं कर सकता। यह किसी को एक कुशल मजदूर या बहुत हुआ तो एक टैक्नोक्रेट बना सकता है। इसलिए व्यवसायिक शिक्षा जिसके बारे में पूँजीपति इतना हो हल्ला मचाते हैं वह न तो व्यवसाय और न ही उचित शिक्षा को आगे बढ़ाती है।

इसके उदय काल में पूँजीवाद का संकट ऐसा नहीं था जैसा आप आज देख रहे हैं। बल्कि वह तीव्र औद्योगिकीकरण का काल था जिसके लिए टैक्नोलॉजी और सैद्धान्तिक विज्ञानों का विकास अनिवार्य था। इसलिए उन दिनों में पूँजीपति वर्ग ने सामंतवाद के दौरान प्रचालित जो धार्मिक शिक्षा थी उसके खिलाफ धर्मनिरपेक्ष जनवादी और वैज्ञानिक शिक्षा को लागू किया था। वही पूँजीपति वर्ग जो आज विज्ञान और वैज्ञानिक सोच समझ से भयाक्रांत है उन दिनों इसने विज्ञानों के पनपने को प्रोत्साहित किया था। लेकिन आज का पूँजीवाद असमाधेय संकट में आकण्ठ डूबा हुआ है और ह्रासोन्मुखी हो गया है। आज पूँजीपति विज्ञान से मौत जैसा खौफ खाते हैं क्योंकि यह विश्लेषण की शक्ति को विकसित करता है जिसके जरिए लोग सत्य को देख सकते है। यह सत्य कहता है कि जो कुछ भी पुराना है उसे मरना ही है और अस्तित्वहीन हो जाना है; इसलिए पूँजीवाद को भी मरना ही है। यही समाज के विकास की ऐतिहासिक प्रक्रिया है। इसके अलावा इतिहास दिखाता है कि कुछ भी सिर्फ अस्तित्वहीन नहीं होता है– समाज का एक स्वरूप समाज के एक नए और उन्नत्तर समाज को स्थान देते हुए जाता है जो उसके ही गर्भ में पनपता है। सटीक रूप से यही सत्य है जिससे पूँजीपति वर्ग डरता है और छिपाने का प्रयास करता है। लेकिन वे विज्ञान को पूरी तरह नकार भी नहीं सकते हैं क्योंकि भूमण्डलीय बाजार में विभिन्न साम्राज्यवादी देशों के बीच आपसी प्रतिस्पर्धा में पूँजीपतियों को कुछ हद तक टैक्नोलॉजी के विकास की जरूरत और चाह है। इसलिए जैसा कि एक महान मार्क्सवादी चिन्तनकार और हमारे शिक्षक कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया कि पूँजीपति वर्ग आज विज्ञान के टैक्नीकल पहलुओं और आध्यात्मवाद के बीच सम्मिश्रण करने का प्रयास कर रहा है यही चिन्तन के रैजीमेण्टेशन को जन्म देता है जो फासीवाद का सांस्कृतिक आधार है। आज केन्द्र और राज्य सरकारें दोनों जिनका नेतृत्व शासक पूँजीपति वर्ग की पार्टियाँ करती हैं ऐसी ही शिक्षा को लागू कर रही हैं जो छात्रों को न केवल अपनी व्यवस्था की सेवा करने के अनुकूल बनाती हैं बल्कि उन्हें मूल्यबोधों और सामाजिक सरोकार से पूरी तरह विमुख भी बना रही हैं।

अंत में कॉमरेड चक्रवर्ती ने कहा कि शिक्षा पर हमला पूँजीवाद के चौतरफा हमलों का ही एक हिस्सा है। सभी युगों के शासक वर्ग ने सच्चाई को दबान के लिए ज्ञान की प्रगति को अवरुद्ध करने का प्रयास किया है। आज पूँजीवाद चिन्तन के रेजिमेण्टेशन को विकसित करने का प्रयास कर रहा है और जैसा कि कॉमरेड शिवदास घोष ने बताया था कि यदि फासीवाद आया तो समाज में चन्द लोग ही बचेंगे जिन्हें मनुष्य कहा जा सकेगा क्योंकि फासीवाद मनुष्यत्व के विकास की प्रक्रिया को ही बाधित कर देता है। यही वजह है कि पूँजीपति शासकगण धर्मनिर्पेक्ष–जनवादी और वैज्ञानिक शिक्षा का विरोध करते हैं। हमारे देश में सभी राजनीतिक पार्टियाँ, यहाँ तक कि तथाकथित कम्युनिस्ट पार्टियाँ भी जब सरकारी गद्दी पर बैठती हैं शासक वर्ग की सेवा करती हैं और बिना किसी अपवाद के इसी तरह काम करती हैं। वे शिक्षा नीतियों को इस प्रकार तैयार करती हैं और लागू करती हैं जो शासक वर्ग के षड्यन्त्रों के अनुकूल हों।

छात्रों से पुरजोर अपील करते हुए कॉमरेड चक्रवर्ती ने कहा: ''आप ऑल इण्डिया डीएसओ के सदस्यों की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ लड़ने की शानदार परम्परा रही है। मुझे यकीन है, आज भी आप शिक्षा सम्बंधित इस षड्यन्त्र के खिलाफ दृढ़ और सतत संघर्ष छेड़ेंगे।''

जिला स्तरीय नागरिक सम्मेलन

लखनऊ (उ.प्र.) : 07 सितम्बर को लखनऊ शहर के गाँधी भवन के कर्णभाई सभागार में जन प्रतिरोध–आन्दोलन समिति की उत्तर प्रदेश राज्य समिति की ओर से जिला स्तरीय नागरिक सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें जिले के अनेक बुद्धिजीवियों व समाजसेवियों ने भाग लिया। सम्मेलन की अध्यक्षता समिति के राज्य सचिव प्राणनाथ त्रिपाठी ने की और इसके मुख्य वक्ता थे शहर के मानिन्द व विख्यात उर्दूविद् तथा उक्त राज्य समिति के उपाध्यक्ष डॉ. असमत मलिहाबादी।

डॉ. मलिहाबादी ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में जन–जीवन की तमाम ज्वलंत समस्याओं व उनके कारणों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। अन्य प्रमुख वक्ताओं में थे वयोवृद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भइयाजी, वयोवृद्ध ट्रेड यूनियन नेता के. के. शुक्ला, राज्य स्तरीय सामाजिक कार्यकर्ता पुष्पेन्द्र विश्वकर्मा, लखनऊ स्थित उर्दू शिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र के प्रोफेसर डॉ. असरारुल हक कुरैशी, प्रदेश के किसान नेता व भूमि अधिग्रहण विरोधी मोर्चा के प्रदेश संयोजक बेचन अली, बैंक आफॅ इण्डिया के अवकाशप्राप्त बैंक मैनेजर व मतदाता आन्दोलन के संयोजक राजीव मोहन और महिला आन्दोलन की प्रदेश स्तरीय कार्यकर्त्री वंदना सिंह। सभा को कल्पना आज़ाद, बी. एल. भारती, वयोवृद्ध कवि मुनिलाल तथा युवा कवि मुकेशानन्द चौहान ने भी सम्बोधित किया। सभी वक्ताओं ने एक स्वर से जीवन्त जुझारू जनान्दोलन की महत्ता स्वीकार की और उस पर यथासम्भव कार्य करने पर जोर दिया। सम्मेलन का संचालन प्रदेश समिति के कोषाध्यक्ष व विज्ञानकर्मी जयप्रकाश मौर्य ने किया। इस एक दिवसीय सम्मेलन के आखिरी चरण में सम्मेलन के निष्कर्ष रूप में आयद जिम्मेदारियों के पुरजोर निर्वहन के लिए एक जिला स्तरीय ग्यारह सदस्यीय समिति का गठन किया गया। जिला समिति के संरक्षक मण्डल में भइयाजी व के.के. शुक्ला ससम्मान स्वीकार किये गये। नवगठित जिला समिति इस प्रकार है: अध्यक्ष – डॉ. असमत मलिहाबादी, उपाध्यक्ष – राजीव मोहन एवं डॉ. असरारुल हक कुरैशी, सचिव – सामाजिक कार्यकर्त्ता यश कुमार, सहसचिव – वन्दना सिंह एवं सामाजिक कार्यकर्ता अजय शर्मा, कोषाध्यक्ष – विज्ञानकर्मी शैलेश राव तथा कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों के रूप में प्राणनाथ त्रिपाठी, जयप्रकाश मौर्य, सामाजिक कार्यकर्ता वीरेन्द्र त्रिपाठी एवं मुकेशानन्द चौहान शामिल किये गये।

भगत सिंह जयंती पर बाइक रैली

आरोन : भगत सिंह जयंती पर आरोन के आसपास के गाँवों में एक मोटरसाइकिल रैली निकाली गई जिसमें बड़ी संख्या में नौजवान शामिल हुए। रैली का शुभारम्भ एसयूसीआई(सी) के जिला सचिव कॉ. प्रदीप आरबी एवं स्थानीय प्रभारी मनीष श्रीवास्तव ने किया। रैली में लगभग 70 वाहन चालकों ने शहीद भगत सिंह को अपनी श्रद्धांजलि दी। नगर में 5 जगह स्वागत द्वार लगाये गये और एमएसएस द्वारा कई स्थानों पर रंगोलियाँ बनाई गई। लगभग 15 गाँवों में सभाएं करते हुए ये रैली बरखेड़ागिंद गाँव में पहुंची। जहाँ इस रैली का समापन किया गया। वहाँ हुई सभा को पार्टी की जिला कमेटी सदस्य कॉमरेड लोकेश शर्मा ने सम्बोधित किया। इसमें आरोन डीएसओ टीम द्वारा एक नाटक का मंचन किया गया और भगत सिंह यादगार मंच के साथी मुलायम अली द्वारा एक गजल पेश की गई। रैली का संचालन प्रदीप सेन यथार्थ, सोनू शर्मा, तेजभान साहू द्वारा किया गया।

पेन्शन बिल....

(पृष्ठ 1 का शेष)

स्मरण रहे कि पेन्शन फण्ड में प्रत्यक्ष विदेशी पूँजीनिवेश (एफडीआई) की मात्रा 26% की गई है और बीमा क्षेत्र में एफडीआई बढ़ने के चलते यह और भी बढ़ाई जाएगी। भविष्य निधि में जमा रुपयों पर आयकर में अब तक छूट थी लेकिन नये कानून के मुताबिक संचित राशि का 60% तक ही 60 साल की उम्र यानी सेवानिवृति पर टैक्स काटने के बाद वापस दिया जाएगा। संचित राशि के 40% से कर्मचारी/जमाकर्ता को एन्युइटी खरीदनी होगी। इस एन्युइटी पर जो रिटर्न मिलेगा उसी को पेन्शन का नाम दिया गया है। अत: पेन्शन नाम भी अस्पष्ट और प्राप्ति भी अनिश्चित। संक्षेप में, पेन्शन के लिए कर्मचारी की देनदारी तो परिभाषित है लेकिन पेन्शन अपरिभाषित ही रख दी गई है।

न्यु पेन्शन सिस्टम (एनपीएस) के दायरे में न केवल सरकारी कर्मचारी आयेंगे बल्कि असंगठित क्षेत्र के मजदूरों सहित सारी जनसंख्या इसके दायरे में आयेगी, यहाँ तक कि जो फिलहाल चालू ईपीएफ स्कीम में पैसा जमा कराते हैं उनको भी इसके साथ जोड़ दिया जाएगा। इसलिए यह साफ जाहिर है कि देशी–विदेशी कारपोरेट पूँजी और संकटग्रस्त पूँजीवादी व्यवस्था के स्वार्थ में जनता के खून का आखिरी कतरा तक निचोड़ने और जनता को घोर असुरक्षा में धकेल देने का यह एक सुनियोजित षड्यंत्रकारी हमला है। इन हालात में, शासक पूँजीपति वर्ग द्वारा रची गई इस घिनौनी साजिश के खिलाफ लगातार दीर्घस्थायी एकजुट आन्दोलन गठित करने के लिए हम सभी क्षेत्रों के मेहनतकश लोगों का आह्वान करते हैं।

कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के अनुरूप लोगों को चुनावी मोहजाल से मुक्त करने का तीव्र संघर्ष छेड़ें

गुवाहाटी में कॉमरेड असित भट्टाचार्य

(सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष के 37वें स्मृति दिवस पर गत 5 अगस्त को गुवाहाटी, आसाम में आयोजित सभा में एसयूसीआई (सी) पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड असित भट्टाचार्य द्वारा दिए गए भाषण के अंश)

शुरूआत में कॉमरेड असित भट्टाचार्य ने कहा: इस युग के एक अग्रणी मार्क्सवादी चिन्तनकार और हमारी पार्टी के संस्थापक महासचिव कॉमरेड शिवदास घोष को 37 साल पहले हमने खो दिया था। विश्व सर्वहारा क्रान्ति का लक्ष्य जिसे महान नेताओं मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्टालि, माओ त्से तुंग ने विश्व के सर्वहाराओं के सामने बुलन्द किया था उसे महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष ने अपनी पूरी शक्ति और जज्बे के साथ अपनाया। सर्वहारा क्रान्ति के साथ उनका जीवन एकात्म हो गया था। जब वे एक अनुपम, असाधारण और वास्तव में ही शानदार संघर्ष के माध्यम से इस महान क्रान्तिकारी उद्देश्य पर नई रोशनी डाल रहे थे और इसे और भी समृद्ध बनाने का प्रयास कर रहे थे तभी मृत्यु ने उन्हें असमय हमसे छीन लिया। जो अनुपम संघर्ष उन्होंने दिन-प्रतिदिन संचालित किया, पार्टी के नेता-कार्यकर्ता उसे स्मरण करते हुए भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन में खुद को संलिप्त करने और महान जिम्मेदारी निभाने के लिए उससे शक्ति प्राप्त करते हैं। आज इस स्मृति दिवस पर भी वे देश भर में उनकी अनमोल शिक्षाओं को याद करेंगे और नई पीढ़ी को प्रेरित करेंगे। साथ ही भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन के उद्देश्य को पूरी शिद्दत के साथ तीव्रतर करने के लिए उन्हें अपने जीवन में लागू करने की शपथ लेंगे।

अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य–बेरहम पूँजीवादी शोषण के खिलाफ लोग प्रतिवाद में फट पड़ रहे हैं

कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं की रोशनी में मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय परिस्थिति की संक्षिप्त पड़ताल के क्रम में कॉमरेड असित भट्टाचार्य ने कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं को रेखांकित किया। विश्व आर्थिक व्यवस्था जिस गहन गर्त में डूबी हुई है उसका जिक्र करते हुए उन्होंने कहा: दुनिया भर में मेहनतकश जनता गहन आर्थिक संकट के साथ-साथ राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी गहन संकट के भंवर में फंसी हुई है। कहीं भी इससे बचने का उपाय नहीं है। पूरी दुनिया में मानें चक्रवात आया हुआ है; प्रत्येक देश में लोग दमघोटू परिस्थिति में जी रहे हैं। और यह चौतरफा संकट विभिन्न देशों में, विभिन्न रूपों में प्रतिबिम्बित हो रहा है। यूरोप और अमेरिका से लेकर एशिया और अफ्रीका तक, सभी जगह लोग आज आन्दोलनों में सड़कों पर उतर रहे हैं। कुछ साल पहले तक भी पूँजीवादी दुनिया के सरगना अमेरिका में जन आन्दोलन शक्ति नहीं जुटा सके थे। आज लोग वहां बार-बार आन्दोलन में फट पड़ रहे हैं। निरन्तर एक के बाद एक मीटिंग, प्रदर्शन और प्रतिवाद संगठित किए जा रहे हैं। घोर आर्थिक संकट और युद्धों में अमेरिकी साम्राज्यवाद की संलिप्तता निर्णायक चुनावी मुद्दे बन गए हैं। ऐसा हो रहा है कि प्रदर्शनकारी नारे लगाते हुए कई दिनों तक सड़कों पर कब्जा जमाए रहते हैं। कारण क्या है? अमेरिका में लोगों के जीवन और जीवन यापन की सुरक्षा आज न केवल दाव पर लगी हुई है बल्कि यह पूरी तरह खत्म हो गई है। आर्थिक संकट इतना घनघोर हो गया है कि अमेरिका की जनता अपने देश के शासकों पर जबरदस्त दबाव डाल रही है कि इराक, अफगानिस्तान सहित अन्य देशों से सैनिकों को तुरन्त वापस बुलाया जाए। आम लोग अब साम्राज्यवादियों के स्वार्थ में परिकल्पित और संचालित ऐसे युद्धों के आर्थिक भार को वहन करने के इच्छुक नहीं हैं। और अमेरिकी साम्राज्यवादी जो जनमत की जरा भी परवाह नहीं करते थे उन्हें इराक और अफगानिस्तान को लूटने-खसोटने की अपनी चाह

को छोड़ना पड़ रहा है। लोगों की जबरदस्त मांग के दबाव में अमेरिकी शासकों को इन देशों से पीछे हटने पर मजबूर होना पड़ रहा है। इस तथ्य से ही समझा जा सकता है कि पूँजीवादी-साम्राज्यवादी खेमे का सरगना अमेरिका कितने गहरे आर्थिक संकट में डूबा हुआ है। बेरोजगारी अब 8% तक पहुँच गई है। हालांकि वास्तव में यह इससे कहीं अधिक है। न सिर्फ अमेरिका बल्कि तमाम यूरोपीयन देश भी आर्थिक संकट के भंवर में फंसे हुए हैं। मानों एक जहाजी बेड़ा गहरे समुद्र में गोते खा रहा हो। रोजगार का कहीं कोई अवसर नहीं है। एक के बाद एक फैक्ट्रियाँ बंद हो रही हैं। औद्योगिकीकरण का रास्ता पूरी तरह अवरुद्ध है। महंगाई की निरन्तर मार से लोग बिना पतवार की नाव की तरह खोया हुआ महसूस कर रहे हैं।

प्रतिक्रान्ति के माध्यम से सोवियत यूनियन और पूर्वी यूरोपीय देशों में समाजवाद के पतन के बाद साम्राज्यवादी खेमे ने सोचा था कि सारी दुनिया उनकी मुट्ठी में हैं। लेकिन बावजूद इसके वे नैया को डूबने से बचाने में असमर्थ हैं। एक के बाद दूसरे देश में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था ताश के पत्तों की तरह चरमरा रही है। जैसे घर में आग लगी हो तो लोग बदहवास बाहर भागते हैं वैसे ही आर्थिक संकट, जीवन और आजीविका में संकट से जर्जरित वे घर में बैठे नहीं रह सकते हैं। लगभग हर दिन वे आक्रोश में सड़कों पर फट रहे हैं। चाहे एशिया, अफ्रीका, लेटिन अमेरिका हो–वस्तुत: हर देश में स्थिति ऐसी ही है। लोग बेचैन हो रहे हैं। आपने देखा कि हाल ही में ब्राजील में क्या हुआ। चीन, जापान से लेकर इराक, सीरिया, ट्यूनिशिया, इजिप्ट–जिस भी देश को आप देखें– लोग मुख्यत: आर्थिक कारण की वजह से बेचैनी महसूस कर रहे हैं। यह प्रतिवाद विभिन्न देशों में विभिन्न रूपों में प्रकट हो रहा है। लेकिन यदि आप गहराई से कारणों की पड़ताल करेंगे तो निश्चित ही पाएंगे कि समस्याएं जो ऊपर से नितांत गैर-आर्थिक प्रतीत होती हैं अंतत: उनकी जड़ भी आर्थिक कारकों में ही निहित है। फिर भी लोगों की चेतना के सापेक्षत: निम्न मान का फायदा उठा कर पूँजीवादी-साम्राज्यवादी शासक इन आन्दोलनों को कुचलने के लिए क्रूर बल का इस्तेमाल कर रहे हैं या लोगों के एक तबके को दूसरे के खिलाफ भड़का रहे हैं। उन्हें भ्रातृघाती खूरेंजी में उलझा रहे है या धूर्तता के साथ असल मुद्दों और उनकी समस्याओं के मूल कारण से ध्यान बंटाने की बदनीयत से शासकगण अचानक चुनाव करा देते हैं और इस प्रकार उन आन्दोलनों पर ठण्डा पानी डालने का प्रयास करते हैं। मार्क्सवादी नजरिए से पूँजीवादी-साम्राज्यवादी शासकों के प्रभुत्व में अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य का सारांश यही है।

राष्ट्रीय परिदृश्य–इतना ही संकटपूर्ण

राष्ट्रीय परिस्थिति पर बोलते हुए कॉमरेड असित भट्टाचार्य ने कहा: हमारे देश में आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्रों के हालात इससे भिन्न नहीं हैं। महंगाई की आग में देश जल रहा है। बेरोजगारी की समस्या ने खतरनाक आयाम अख्तियार कर लिया है। यूरोप और अमेरिका के मुकाबले भारत में नाममात्र का औद्योगिकीकरण हुआ है। कुछ उद्योग जो जनता के पैसे से सार्वजनिक क्षेत्र में लगे थे वे या तो बन्द हो रहे हैं नहीं तो कौड़ियों के मोल पूँजीपति वर्ग को सौंपे जा रहे हैं। आजादी आन्दोलन के दिनों से जो मांग उठाई जा रही थी कि विदेशी पूँजी को जब्त किया जाए और विदेशी पूँजी के शोषण का खात्मा करने के लिए विदेशी पूँजी के प्रवेश को रोका जाए उसे पैरों तले रौंदा जा रहा है और विदेशी पूँजी को प्रवेश की खुली छूट दी जा रही है। परिणामस्वरूप नव-औपनिवेशिक शोषण दिन पर दिन अधिकाधिक निर्मम होता जा रहा है। सिर्फ इतना ही नहीं कि सरकार कोई श्रमप्रधान उद्योग लगाने का तनिक भी प्रयास नहीं कर रही है बल्कि लोगों के पैसे से देशी-विदेशी बड़े-बड़े उद्योगपतियों को खुले हाथ से अनुदान दे रही है। देश भर में करोड़ों मजदूरों की छंटनी हो रही है। उनके जीवन यापन का कोई साधन नहीं बचा है। रोजगार को कोई अवसर नहीं है। स्थाई रोजगार शब्द आज वस्तुत: मिटा दिया गया है। शारीरिक श्रम हो या बौद्धिक श्रम, दोनों क्षेत्रों में कान्ट्रेक्ट सर्विस लागू कर दी गई है। कितने ऐसे भाग्यशाली हैं जिन्हें यह भी मिलता है? बुर्जुआ अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने एक समय कहा था कि हर आदमी दो हाथ और एक सिर लेकर पैदा हुआ है और अपने श्रम के जरिए स्वतन्त्र रूप से खुद को बचाए रखने के लिए आत्मनिर्भर है। वे सही थे; असल में ऐसा ही है लेकिन दुनिया भर के पूँजीवादी देशों में करोड़ों करोड़ लोग बेरोजगार हैं जो हमारे देश के लिए भी सच है। यदि बेरोजगारों, अर्धरोजगार और वस्तुत: बेरोजगार लोगों की संख्या को जोड़ा जाए तो हमारे देश में आधी आबादी के पास असल में कोई रोजगार नहीं है। जीवन यापन के साधन पाने का कोई जरिया नहीं, कोई अवसर नहीं है। परिस्थिति लोगों को बदहवास बना रही है। इस दबाव के चलते ज्यादा से ज्यादा संख्या में लोग आखिरी रास्ते के तौर पर आत्महत्या को अपना रहे हैं। दूसरा बड़ा तबका जीवन यापन के अनैतिक साधनों का सहारा ले रहा है और समाज-विरोधी बनाता जा रहा है। आए दिन हजारों युवतियाँ अपनी देह बेचने पर मजबूर हो रही हैं–इसके पीछे भी मूल कारण यह है कि वे खुद के लिए जीने का निश्चित साधन नहीं पाती हैं। दूसरी तरफ देखा गया है कि इसी वजह से पतियों द्वारा पत्नियों, बेटे और बेटियों को मारने और बाद में खुदकुशी करने जैसी अमानवीय घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं। इसी तरह से अपने बच्चों को खिला पाने में असमर्थ माताएं भी अपने बच्चों को मार कर खुद भी आत्महत्या कर रही हैं। इस प्रकार की अकल्पनीय दिल दहला देने वाली आत्मघाती घटनाएं सभी हदें पार कर रही हैं। इस अकल्पनीय क्रूर और नारकीय स्थिति के लिए कौन जिम्मेदार है? इसके लिए पूँजीवादी शासन और शोषण के सिवा और किसको जिम्मेदार ठहराया जा सकता है? पूँजीपति शासक जो अर्थव्यवस्था और राजनीति को कण्ट्रोल करते हैं। इसके लिए जिम्मेदार हैं। यहीं हैं जो देश के 125 करोड़ लोगों का भाग्य निर्धारित करते हैं। लोगों को आजीविका के साधन मिलेंगे या नहीं, उनके खाने, कपड़े, रहने, शिक्षा चिकित्सा की व्यवस्था होगी या नहीं–सब कुछ शासक पूँजीपति वर्ग और उनके एजेण्ट के रूप में काम कर रही ताबेदार पार्टियों द्वारा निर्धारित और नियन्त्रित किया जाता है। तमाम ताकत मुट्ठीभर पूँजीपतियों उनकी हितरक्षक राजनीतिक पार्टियों और सर्वोपरि राजसत्ता के हाथों में निहित और संकेन्द्रित है। आम लोगों के जीवन पर यह हमला आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। संस्कृति-नैतिकता

(शेष पृष्ठ 4 पर)

बस्ती बचाओ संघर्ष समिति का आन्दोलन

एचईसी प्रशासन डीसी व एसडीओ की सहायता से लगातार परीक्षा के समय बस्तियों के सैकड़ों छात्र-छात्राओं पर मानसिक दबाव बनाने के लिए अनेक हथकण्डे अपना रहा है। 50000 मतदाताओं के वोटर कार्ड रद्द कर दिए गए हैं और साथ ही वहाँ बसे सभी लोगों के पानी व बिजली के कनेक्शन काट दिए गए हैं। इसके खिलाफ 2 सितम्बर को बस्ती बचाओ संघर्ष समिति के बैनर तले धुर्वा गोल चक्कर से एचईसी हैडक्वार्टर तक छात्र-छात्राओं, महिलाओं एवं हजारों अन्य बस्तीवासियों ने प्रदर्शन किया और एचईसी के एम डी का पुतला भी दहन किया।

सभा की अध्यक्षता एसयूसीआई (सी)राँची जिला कमिटी के सचिव एवं बस्ती बचाओ संघर्ष समिति के संस्थापक सिद्धेश्वर सिंह ने की। पार्टी की राज्य सांगठनिक कमेटी की सदस्या कॉ. केया डे ने कहा कि पिछले कई वर्षों से एच ई सी प्रशासन द्वारा एचईसी क्षेत्र में 50 वर्षों से भी अधिक अवधि से बसे लाखों लोगों को अपने निजी स्वार्थ के उद्देश्य से अतिक्रमण के नाम पर सशस्त्र पुलिस बल व बुल्डोजर के दम पर हटाने की कोशिश की जा रही है। लेकिन बस्तीवासियों की एकता व जुझारू आन्दोलन के समक्ष हमेशा उन्हें पीछे हटने को बाध्य होना पड़ा है। हर बार अपने गलत मनसूबों में असफल होने के पश्चात इस बार एचईसी प्रशासन के द्वारा बस्तीवासियों को हटाने का नया तरीका अख्तियार किया जा रहा है। एचईसी प्रशासन बस्तीवासियों के पहचान पत्र को रद्द करने और साथ ही उनका पानी व बिजली कनेक्शन काट कर उन्हें मूलभूत सुविधाओं से वंचित कर देना चाह रहा है ताकि बस्तीवासी इन सुविधाओं के अभाव में स्वयं ही बस्तियाँ छोड़कर चले जाएं। लेकिन यह उनकी गलतफहमी है। एचईसी क्षेत्र में बसे लोग उनके मनसूबों को अच्छी तरह समझते हैं और ये अपने घरों को बचाने के लिए अपनी एकता और जनान्दोलन के रास्ते किसी भी हद तक लड़ने को तैयार हैं।

कार्यक्रम का संचालन बस्ती बचाओ संघर्ष समिति के सदस्य कॉ. अशोक सिंह ने किया। बस्ती बचाओ संघर्ष समिति की ओर से एचईसी क्षेत्र के बस्तीवासियों के वोटर कार्ड को रद्द करने और पानी व बिजली कनेक्शन काटने का प्लान वापस लेने और एचईसी क्षेत्र में बसे समस्त बस्तीवासियों को मालिकाना हक दिये जाने की मांग की गई।

महिलाओं व छात्राओं पर बढ़ते जुल्म के खिलाफ
छात्राओं का प्रदर्शन

भागलपुर: गैंगरेप, रेप, हत्या, दुष्कर्म तथा महिलाओं व छात्राओं पर बढ़ते जुल्म के खिलाफ एआईडीएसओ तथा एआईएमएसएस की ओर से 18 सितम्बर को भागलपुर जिलाधिकारी के समक्ष प्रदर्शन किया गया। जुलूस भागलपुर स्टेशन परिसर से निकला और शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचा। जुलूस में शामिल छात्र-छात्राएं व महिलाएं जोशीले नारे लगा रही थीं। वे मांग कर रही थीं कि 17 सितम्बर को समाचार पत्र में प्रकाशित भागलपुर गैंगरेप की घटना की सीबीआई जांच करायी जाये, अश्लीलता-नग्नता, शराबखोरी-नशाखोरी पर कारगर रोक लगायी जाये, महिलाओं व छात्राओं की सुरक्षा की गारंटी की जाये, शराब के उत्पादन व बिक्री पर पूरी तरह से रोक लगायी जाये, खेल-कूद व सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाये, भागलपुर शहर में लगी महापुरुषों की प्रतिमाओं को सम्मानजक स्थिति में लाया जाये।

जिलाधिकारी कार्यालय के समक्ष सभा को एआईडीएसओ भागलपुर जिलाध्यक्ष रोशन कुमार रवि, उपाध्यक्ष रवि कुमार सिंह, कार्यालय सचिव श्याम देव, एआईएमएसएस राज्य कमिटी सदस्या इन्दु कुमारी, ज्योति आदि ने संबोधित किया। सभी वक्ताओं ने समाज में महिलाओं पर बढ़ते जुल्म पर चिंता जताते हुए महिलाओं की सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करने की मांग की। भागलपुर में गैंगरेप की उजागर हुई घटना को इंगित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि शहर में पुलिस-अपराधी गठजोड़ की सक्रियता चिंता का विषय बनी हुई है। इसके लिए तमाम तबके के लोगों को आगे आकर जुझारू आंदोलन निर्मित करने की आवश्यकता पर वक्ताओं ने बल दिया।

कॉ. असित भट्टाचार्य का भाषण...

(पृष्ठ 3 का शेष)

के क्षेत्र में इस हमले ने और भी खतरनाक असहनीय चरित्र हासिल कर लिया है। पूँजीपति वर्ग विभिन्न षड़यन्त्र रचने की विभिन्न तिकड़में भिड़ा रहा है। उनके षड़यन्त्र का मकसद है कि छात्र-नौजवान इस बात को कभी समझ ही न सकें कि लोगों के जीवन में, उनके अपने जीवन में इस चौतरफा संकट का मूल कारण पूँजीवादी शासन-शोषण है; इसलिए कि वे समझ ही न सकें कि यही संकट है जो हर घड़ी लोगों को मौत के मुँह में धकेल रहा है। पूँजीपति वर्ग यह सुनिश्चित करना चाहता है कि छात्र-नौजवानों में इस दुश्मन का मुकाबला करने के लिए लड़ाकू मनोभाव पैदा न हो सके। इसलिए वे शिक्षा से लेकर कला, साहित्य हर चीज के सारतत्व को तबाह कर रहे हैं। किताबों, मैगजीनों और मास मीडिया के माध्यम से वे अश्लीलता को इस तरह बढ़ावा दे रहे हैं ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि हर छात्र, हर युवक बलात्कारी बन जाए लेकिन कभी लड़ाकू मनोभाव से लैस न हो सके, कभी एक क्रान्तिकारी न बन सके, सचेत और शिक्षित न हो सके।

नैतिक-सांस्कृतिक पतन के प्रति कॉमरेड शिवदास घोष की चेतावनी

कॉमरेड असित भट्टाचार्य ने आगे कहा कि: कॉमरेड शिवदास घोष ने बार-बार पुरजोर चेतावनी दी थी कि यदि एक राष्ट्र भूखा भी रहे तब भी वह अन्याय के खिलाफ उठ खड़ा हो सकता है यदि उसका नैतिक बल अटूट रहे। यही वजह है कि बुर्जुआ वर्ग नैतिक रीढ़ तोड़ने के लिए लगातार एक पर एक षड़यन्त्र रच रहा है। इस लक्ष्य के मद्देनजर कितनी ही तिकड़मों का सहारा वे ले रहे हैं, एक के बाद दूसरा षड़यन्त्रकारी जाल बुन रहे हैं और ऐसे षड़यन्त्रकारी जाल बुनने में माहिर भाड़े के पण्डितों की उन्हें कोई कमी नहीं है। फिर भी साथ ही साथ देखा जा सकता है कि प्रतिवाद और प्रतिरोध आन्दोलनों को तोड़ने के उनके भरसक प्रयासों के बावजूद इस देश के हर राज्य में आन्दोलन की आग धधक रही है। पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण तक लोगों का संचित गुस्सा विस्फोटक ताकत के साथ फट पड़ रहा है। इस स्थिति में पूँजीवाद के एजेंण्ट और पूँजीपति वर्ग के भाड़े के स्वयंभू 'बुद्धिजीवी' संदिग्ध साधनों से लोगों को गुमराह कर रहे हैं। वे लोगों के एक तबके को दूसरे के खिलाफ भड़का रहे हैं। वे जाति, धर्म, सम्प्रदाय और क्षेत्र के आधार पर लोगों में विभाजन और फूट डाल रहे हैं, वे आत्मघाती रास्ते पर उनको धकेल रहे हैं।

कॉमरेड शिवदास घोष का ठोस राष्ट्रीय परिस्थिति का ठोस विश्लेषण

देश की आजादी की पूर्व संध्या पर कॉमरेड शिवदाास एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने समझ लिया था कि भविष्य में क्या होने जा रहा है। उस समय उन्होंने बताया था कि यह सही है कि भारत आजाद होने जा रहा है। देशभक्त लोगों के सशक्त संघर्ष के सामने टिक न पाने की वजह से ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासक देश छोड़ने पर मजबूर हो गया है। लेकिन हर तरह के शोषण से मुक्ति की जो उम्मीद और अरमान जो आजादी आन्दोलन के दौरान लोग दिल में संजोए थे उन पर पानी फिरने जा रहा है। क्योंकि नया शोषक वर्ग–टाटा, बिड़ला और अन्य इस देश का पूँजीपति वर्ग–नए दमनकारी वर्ग के रूप में ब्रिटिश साम्राज्यवाद का स्थान लेने जा रहा है। इसलिए सच्ची मुक्ति हासिल करने के लिए संघर्ष का एक नया दौर छेड़ना पड़ेगा।

अत: यह परिवर्तित परिस्थिति थी जिसमें नए शोषकों भारतीय पूँजीपति वर्ग ने षड़यन्त्रों और विश्वासघात के जरिए लोगों को उनके संघर्ष के फल से वंचित करते हुए सत्ता पर कब्जा कर लिया। इस परिवर्तित संदर्भ में जनसंघर्ष की रणनीति निर्धारित करते हुए कॉमरेड शिवदास घोष ने मेहनतकश जनता से आह्वान किया कि क्रान्ति के धक्के से पूँजीपति वर्ग को सत्ता को उखाड़ फैंको। यह काम चुनावों के जरिए हासिल नहीं किया जा सकता। बार-बार उन्होंने लोगों को जोर देकर बताया कि क्रान्ति और चुनाव एक बात नहीं होती है। चुनावों के माध्यम से सिर्फ सरकार बदलती है; एक पार्टी की बजाए दूसरी पार्टी सरकार बनाती है। लेकिन इससे सत्तासीन वर्ग को हटाया नहीं जाता है; शोषणमूलक पूँजीवादी आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था समाप्त नहीं होती है। क्रान्ति के धक्के से ही पूँजीपति वर्ग को सत्ता से उखाड़ फेंका जा सकता है। सही कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में ही यह किया जा सकता है। कॉमरेड घोष ने आगे बताया था कि आजादी आन्दोलन के दौरान यदि एक सच्ची क्रान्तिकारी मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी होती तो शोषण से मुक्त होने की बजाए नए सिरे से शोषणमूलक पूँजीवादी शासन की जंजीरों में लोग जकड़े नहीं जाते। हालांकि कम्युनिस्ट नामधारी पार्टी (अविभाजित सीपीआई) उस समय भारत में मौजूद थी, असल में यह एक पेटी-बुर्जुआ सोशल डैमोक्रेटिक पार्टी थी। मार्क्सवादी-लेनिनवादी मूल शिक्षाओं को पकड़ पाने में नाकाम रहने की वजह से यह खुद को सही रास्ते पर एक असल कम्युनिस्ट पार्टी के रूप में कतई ढाल नहीं पाई। इसी वजह से यह सही तरीके से निर्धारित ही नहीं कर सके कि क्रान्ति के धक्के से किस वर्ग को सत्ता से उखाड़ फेंकना है। दृढ़ निश्चय के साथ कॉमरेड शिवदास घोष ने कहा था कि एक सही कम्युनिस्ट पार्टी के निर्माण और उसके नेतृत्व में तेजी से क्रान्तिकारी संघर्ष को संचालित करने की जरूरत है ताकि पूँजीवाद-विरोधी क्रान्ति के लिए तैयारी तेज की जा सके। कॉमरेड असित भट्टाचार्य ने कहा कि जो

(शेष पृष्ठ 7 पर)

महान शिक्षक एवं भारतीय पुनर्जागरण काल के प्रवर्तक ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की जयन्ती

'शिक्षा बचाओ दिवस' के रूप में मनाई गई

दिल्ली विश्वविद्यालय (दिल्ली): 26 सितम्बर 2013, ऑर्ट्स फैकल्टी के गेट के सामने ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के फोटो पर माल्यार्पण किया गया तथा एक उद्धरण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसी के साथ एक विचार गोष्ठी का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन राज्य कमेटी सदस्य कॉ. कृष्णेन्दु मुखर्जी ने किया तथा सभा को मुख्य रूप से राज्य कमेटी सचिव कॉ. प्रशांत कुमार ने सम्बोधित किया। **सत्यवती कॉलेज (दिल्ली):** 27 सितम्बर 2013, कॉलेज के प्रांगण में एक सभा का आयोजन किया जिसमें कॉलेज की ओर से प्रो. रवीन्द्र गोयल, प्रो. शशि कुमार ने छात्रों को सम्बोधित किया। ऑल इण्डिया डीएसओ की ओर कॉ. प्रशांत ने अपना वक्तव्य रखा। सभा का संचालन कॉ. कृष्णेन्द्र मुखर्जी ने किया। **बुराड़ी (दिल्ली):** 28 सितम्बर 2013, इलाके के एक स्कूल के सामने ईश्वरचन्द्र विद्यासागर एवं शहीद प्रीतिलता वाद्देदार के फोटो पर माल्यार्पण करते हुए उद्धरण प्रदर्शनी एवं एक छात्र सभा का आयोजन किया गया जिसको कॉ. राहुल सरकार ने सम्बोधित किया। **शालीमार गार्डन (दिल्ली):** 28 सितम्बर 2013, स्वामी विवेकानन्द नामक स्थानीय पार्क में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर एवं शहीद-ए-आज़म भगतसिंह की फोटो पर माल्यार्पण करके एक उद्धरण प्रदर्शनी एवं छात्र सभा का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न स्कूलों के छात्रों ने भाग लिया। सभा को मुख्य वक्ता के रूप में दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्रशांत कुमार ने सम्बोधित किया। सभा का संचालन किरोड़ीमल कॉलेज के छात्र कॉ. आशुतोष सिंह ने किया। **गुलाबी बाग (दिल्ली):** 29 सितम्बर 2013, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर एवं शहीद-ए-आज़म भगतसिंह की फोटो पर माल्यार्पण करके एक उद्धरण प्रदर्शनी एवं छात्र सभा का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न स्कूलों के छात्रों ने भाग लिया। सभा को मुख्य वक्ता ऑल इण्डिया एमएसएस की दिल्ली राज्य सचिव कॉ. ऋतु कौशिक के के अलावा डीएसओ दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्रशांत कुमार ने भी सम्बोधित किया। सभा का संचालन स्थानीय इकाई की अध्यक्ष कॉ. मौसम कुमारी ने किया। **बृज विहार (दिल्ली):** 29 सितम्बर 2013, स्थानीय चौक पर ईश्वरचन्द्र विद्यासागर एवं शहीद-ए-आज़म भगतसिंह की फोटो पर माल्यार्पण करके एक उद्धरण प्रदर्शनी एवं एक बुक स्टॉल का आयोजन किया गया। **सीमापुरी (दिल्ली):** ईश्वरचन्द्र विद्यासागर एवं शहीद-ए-आज़म भगतसिंह की फोटो पर माल्यार्पण करके छात्र सभा का आयोजन किया गया। सभा को मुख्य वक्ता के रूप में दिल्ली राज्य कमेटी सदस्य कॉ. रवि कुमार ने सम्बोधित किया। सभा का मंच संचालन स्कूल छात्र कॉ. अशरफ ने किया। **ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज (दिल्ली):** एक छात्र सभा का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न छात्रों ने भाग लिया। सभा में मुख्य वक्तव्य दिल्ली राज्य कोषाध्यक्ष कॉ. मो. आसिफ ने दिया। सभा का संचालन कॉलेज के ही एक छात्र कॉ. सोनू सरगम ने किया।

बडोदरा (गुजरात): शहीद भगत सिंह जयंती की पूर्वसंध्या पर ऑल इण्डिया डीएसओ द्वारा एमएस यूनिवर्सिटी मे एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें विभिन्न फैकल्टियों के छात्र शामिल हुए और शहीद-ए-आजम भगत सिंह की तसवीर पर माल्यार्पण कर उनको श्रद्धांजलि दी।

शहीद-ए-आजम भगत सिंह जयन्ती सम्पन्न

सुलतानपुर : 28 सितम्बर को महाकवि कालिदास आईटीआई अमरेमऊ करौंदी कलां सुलतानपुर में शहीद-ए-आजम भगत सिंह जयन्ती मनाई गयी जिसकी अध्यक्षता संस्थान के प्रधानाचार्य समरनाथ शर्मा ने की। भगत सिंह की फोटो पर पुष्प अर्पित किये। तत्पश्चात् राम कुमार यादव व यज्ञवन्त राव ने क्रान्तिकारी गीत प्रस्तुत किये। संस्थान के अध्यापक यशवन्त राव ने भगत सिंह के जीवन-संघर्षों के बारे में चर्चा की।अखिल भारतीय कृषक खेत मजदूर संगठन के प्रतापगढ़ के अध्यक्ष श्री शेषनाथ तिवारी ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया।

धरने में शामिल लोगों को सम्बोधित करते हुए एआईएसईसी के दिल्ली राज्य अध्यक्ष प्रोफेसर नरेन्द्र शर्मा

अखिल भारतीय प्रतिवाद दिवस पर धरना

नई दिल्ली : शिक्षा पर बढ़ते हमलों के खिलाफ ऑल इण्डिया सेव एजुकेशन कमेटी के आह्वान पर 26 सितम्बर को देशभर में प्रतिवाद दिवस मनाया गया। इसी कड़ी में इस दिन सेव एजुकेशन कमेटी की दिल्ली इकाई की तरफ से छात्रों, अभिभावकों, अध्यापकों व शिक्षाप्रेमी लोगों की तरफ से जंतर-मंतर पर एक धरना दिया गया तथा एक ज्ञापन प्रधानमंत्री को भेजा गया।

इस धरने में शामिल लोगों को एआईएसईसी के दिल्ली राज्य अध्यक्ष प्रोफेसर नरेन्द्र शर्मा के अलावा प्रोफेसर सुबोध शर्मा, राज्य सचिव जी.एस.सिंह, प्रिंसीपल शारदा दीक्षित, महताब सिंह 'अंचल', अशोक गोगिया, मैनेजर चौरसिया, ज्योतिभूषण, अनामिका मिश्रा, शशि वधवा, मंजू किरार व अन्य वक्ताओं ने सम्बोधित किया।

वक्ताओं ने कहा कि देश की आजादी के 65 वर्षों बाद भी देश की शिक्षा व्यवस्था बुरी हालत में है। शिक्षा का स्तर दिनों-दिन गिरता जा रहा है। एक तरफ शिक्षा के निजीकरण-व्यापारीकरण के चलते शिक्षा महंगी हो रही है जिससे गरीब व निम्न मध्यम वर्ग के छात्रों के लिए शिक्षा के दरवाजे बंद हो रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ आठवीं कक्षा तक बेरोकटोक पास करने तथा 10वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा को वैकल्पिक बनाने, स्कूलों में अध्यापकों की कमी, अध्यापकों को गैरअध्यापन कार्यों में व्यस्त करने जैसी नीतियों के कारण शैक्षणिक स्तर बहुत गिर गया है। दिल्ली सरकार भी केन्द्र सरकार के नक्शे कदम पर चल रही है। दिल्ली सरकार हर रोज स्कूल खोलने का नाटक कर रही है मगर स्कूलों की हालत खराब है उनमें बिजली-पानी, शौचालय, लाईब्रेरी, फर्नीचर, लैब, आदि बुनियादी जरूरतों का अभाव है। दिल्ली के 12वीं पास 40 हजार छात्रों को कालेजों में दाखिला नहीं मिलता फलत: अधिकांश छात्र या तो पढ़ना छोड़ देते हैं या फिर ज्यादा फीस देकर प्राईवेट विश्वविद्यालयों का रुख करने को मजबूर होते हैं। सरकार ने पिछले 15 वर्ष से दिल्ली में एक भी सरकारी कॉलेज नहीं खोला है। सरकार कितनी शिक्षा हितैषी है यह इसी से ज्ञात होता है ऊपर से अभी सरकार ने चार वर्षीय डिग्री कोर्स व सेमेस्टर प्रणाली लागू करके और भी बड़ा आघात किया है। चार वर्षीय डिग्री कोर्स छात्रों के न केवल एक वर्ष बर्बाद कर देगा बलिक अभिभावकों पर और अधिक शैक्षणिक शुल्क का बोझ भी बढ़ा देगा। जबकि इससे छात्रों के हुनर में कोई वृद्धि की संभावना नहीं है।

ऑल इण्डिया सेव एजुकेशन कमेटी ने लोगों से अपील की है कि वे सरकार की शिक्षा-विरोधी नीतियों के विरोध में आगे आएं। ऑल इण्डिया सेव एजुकेशन कमेटी ने देशभर से ज्ञापन प्रधानमंत्री को भेजे हैं। दिल्ली कमेटी ने प्रधानमंत्री को भेजे ज्ञापन में सरकार से मांग की है कि आठवीं कक्षा तक बेरोकटोक पास करने की नीति वापस ली जाये, कक्षा 9वीं 10 वीं में आंतरिक मूल्याकंन पद्धति रद्द करो तथा पूर्व की भांति बोर्ड परीक्षा को सभी छात्रों के लिए अनिवार्य बनाई जाये, शिक्षा का निजीकाण-व्यापारीकरण बंद किया जाये, स्कूलों में यौन शिक्षा कार्यक्रम रद्द किया जाये, चार वर्षीय डिग्री कोर्स व सेमेस्टर प्रणाली वापस ली जाये, सभी स्तरों पर 1 अनुपात 30 को रखते हुए पर्याप्त संख्या में नियमित अध्यापकों की भर्ती की जाये, सभी का दाखिला सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त संख्या में स्कूल-कॉलेज खोले जायें, स्कूलों में लाईब्रेरी, प्रयोगशाला, बिजली, पानी, शौचालय, बैठने का उचित प्रबंध सहित तमाम मूलभूत सुविधाएं प्रदान की जाएं।

शिक्षा के निजीकरण-व्यापारीकरण, बेरोक-टोक पास की नीति के खिलाफ प्रदर्शन

जमशेदपुर: शिक्षा पर बढ़ते हमलों के खिलाफ ऑल इण्डिया सेव एजुकेशन कमेटी के आह्वान पर 26 सितम्बर को देशभर में प्रतिवाद दिवस मनाया गया। इसी कड़ी में इस दिन सेव एजुकेशन कमेटी की झारखण्ड इकाई के बैनर तले छात्रों, अभिभावकों, अध्यापकों व शिक्षाप्रेमी लोगों द्वारा शहर में विशाल प्रदर्शन किया गया। झारखण्ड अकेडमिक काउन्सिल के पूर्व चेयरमैन जाने माने बुद्धिजीवी प्रो. सालिग्राम यादव, एआईएसईसी के झारखण्ड राज्य अध्यक्ष प्रोफेसर मित्रेश्वर, राज्य सचिव सुमीत राय, प्रसिद्ध कवि नंद कुमार उनमान, शिक्षक यूनियन के नेता अशोक सुभादर्शी, अभिभावक मंच के नेता जे पी पाण्डेय ने प्रदर्शन की अगुआई की। 5 सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल द्वारा डीसी, जमशेदपुर को ज्ञापन दिया गया।

बातचीत के दौरान प्रतिनिधिमण्डल ने शिक्षकों से गैर शिक्षण काम लिये जाने का कड़ा विरोध किया। शाम को एक सर्कुलर जारी किया गया जिसमें यह उल्लेख किया गया कि आगे से शिक्षकों को मिड डे मील कार्य से मुक्त रखा जायेगा। उन्हें न तो इसका हिसाब-किताब रखना होगा, न चावल, सब्जियों आदि के ढोने की उनकी कोई जिम्मेदारी होगी। सर्कुलर के बाद शिक्षकों ने विजय जुलूस निकाला।

कर्मचारियों की विशाल सभा आयोजित

सभा को संबोधित करते हुए ऑल इण्डिया यू.टी.यू.सी. के राष्ट्रीय सचिवमण्डल सदस्य कॉ. अचिंत्य सिन्हा

नई दिल्ली : 19 सितम्बर 1968 की हड़ताल में शहीद हुए केन्द्रीय कर्मचारियों की शहादत को सम्मान देने के लिए ऑल इण्डिया यू.टी.यू.सी. के आह्वान पर संसद के सामने 19 सितम्बर को एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें दिल्ली की विभिन्न कर्मचारी व श्रमिक यूनियनों के नियमित व ठेके पर कार्यरत सैंकड़ों कर्मचारियों ने हिस्सा लिया, जिनमें एक बहुत बड़ी संख्या आशा वर्कर्स की थी।

सभा में ऑल इण्डिया यू.टी.यू.सी. के आह्वान पर शामिल हुई संबंधित यूनियनों व आमंत्रित विभिन्न यूनियनों के नेताओं द्वारा शहीदों को पुष्पांजलि अर्पित की गई। सभा की अध्यक्षता कॉ. हरीश त्यागी एवं सहआयोजक यूनियनों के नेताओं से बने अध्यक्ष मंडल द्वारा की गई।

सभा को संबोधित करते हुए ऑल इण्डिया यू.टी.यू.सी. के राष्ट्रीय सचिव कॉ. अचिंत्य सिन्हा ने कहा कि सरकारी क्षेत्र, अस्पतालों, शिक्षा एवं अन्य सामाजिक क्षेत्रों, ठेकेदारीकरण, ठेका कर्मियों के शोषण, आशा के निजीकरण, विनिवेशीकरण के खिलाफ संघर्ष एवं आंगनबाड़ी कर्मियों के शोषण, नई अंशदायी पेंशन योजना एवं अन्य कर्मचारी-विरोधी नीतियों के खिलाफ संघर्ष वक्त की पुकार है और शहीद कर्मचारियों को सच्ची श्रद्धांजली यही होगी कि हम उनके द्वारा अर्जित अधिकारों को बचाने के लिए एकजुट कर्मचारी आंदोलन गठित करें।

स्मरणीय है कि सन् 1968 में सरकारी कर्मचारियों की राष्ट्रव्यापी हड़ताल के दौरान पुलिस की लाठी-गोलियों से 10 कर्मचारी शहीद हुए व 100 से ऊपर कर्मचारियों को गम्भीर चोट आई थी। हड़ताल के मुद्दे थे: 'मँहगाई पर रोक लगाओ, आवश्यकता आधारित वेतन दो, मँहगाई भत्ते को मूल वेतन में जोड़ो, कर्मचारियों को कैज्युअल व ठेके पर नियुक्त करना बंद करो तथा सरकारी कर्मचारियों को ट्रेड यूनियन करने के अधिकार दो।'

सभा को आशा कर्मचारियों के नेता मैनेजर चौरसिया, नेशनल पब्लिक हैल्थ एलायंस के वीरेन्द्र सिंह दहिया, जे.पी.ए. के दिल्ली अध्यक्ष रामबाबू पाण्डेय एवं कॉन्ट्रेक्ट वर्कर्स, आशा, आंगनवाड़ी, केन्द्रीय कर्मचारियों, राज्य कर्मचारी संगठनों के नेताओं ने भी संबोधित किया।

ऑल इण्डिया यू.टी.यू.सी. के दिल्ली राज्य अध्यक्ष का. हरीश त्यागी ने कहा कि 1968 की सरकारी कर्मचारियों की ऐतिहासिक हड़ताल में जिन मुद्दों को लेकर कर्मचारियों ने अपनी जान दी थी वे आज भी उतने ही महत्व के हैं और आह्वान किया कि सरकार की सभी कर्मचारी-विरोधी नीतियों के खिलाफ सतत संगठित संघर्ष गठित करना आज समय की मांग है। कर्मचारियों की मांगों से सम्बंधित ज्ञापन भी माननीय प्रधानमंत्री व केन्द्रीय स्वास्थ्यमंत्री को प्रेषित किए गए।

शहीद भगत सिंह को याद किया

दुर्ग (छ.ग.) : 28 सितम्बर को आजादी आंदोलन के महान क्रांतिकारी शहीद भगत सिंह की 109 वीं जयंती ए.आई.डी.एस.ओ. जिला दुर्ग इकाई द्वारा साईन्स कॉलेज में कॉ. आत्मा राम साहू, सुराना कॉलेज दुर्ग में त्रिवेणी निर्मलकर, नवीन उच्चतर विद्यालय दुर्ग में शीतल सेन व आदर्श कन्या विद्यालय में पूनम खरोले के नेतृत्व में पूरे सम्मान के साथ मनायी गई। शहीद भगत सिंह की फोटो पर माल्यार्पण कर सभा की गई। कॉ. आत्मा राम साहू ने छात्रों से कहा कि हर युग में छात्र-युवाओं ने संगठित होकर सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक प्रगति के लिए अपने प्राण न्योछावर किये हैं। इसका जीवंत उदाहरण महान क्रांतिकारी शहीद भगत सिंह हैं। अत: इन क्रांतिकारियों के जीवन संघर्षों से सीख लेकर अन्याय व शोषण के खिलाफ जोरदार छात्र आंदोलन निर्मित करना होगा। छात्रों को नीतू साहू ने भी सम्बोधित किया। इस कार्यक्रम में 60 छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

शाम को शहीद चौक पर ए.आई.डी.एस.ओ. जिला दुर्ग इकाई द्वारा चारों क्रांतिकारियों शहीद चन्द्र शेखर आजाद, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, शहीद भगत सिंह, शहीद उधम सिंह की मूर्तियों पर माल्यार्पण कर सभा की गई। इसमें ए.आई.डी.वाई.ओ. के छ.ग. इचार्ज कॉ. विश्वजीत हारोडे ने सभा को सम्बोधित किया।

29 सितम्बर को शहीद भगत सिंह स्कूल में प्रवीण शर्मा के नेतृत्व में स्कूल में रंगोली प्रतियोगिता, 'शिक्षा या भिक्षा' नामक नाटक, क्रांतिकारी गीत, कविता पाठ व सभा का आयोजन किया गया। इसमें छात्र-छात्राओं सहित शुभम पांडे, सुनीता सोनी, गौरव, दीपा, कोमल, दुर्गादीप, अनिता साहू, भूनेश्वरी, पूनम नायक, पूजा सागर, मधु अग्रवाल शत्रुहन वर्मा सहित काफी लोग उपस्थित थे। जिला राजनंदगांव में देवेन्द्र पाटिल के नेतृत्व में दिग्विजय कॉलेज राजनंदगांव में शहीद भगत सिंह को याद किया गया। इस अवसर पर ऑल इंडिया डेमोक्रेटिक यूथ आर्गेनाइजेशन के द्वारा कैलाश नगर, दुर्ग में सभा की शुरूआत शहीद भगत सिंह के फोटो पर माल्यार्पण के साथ हुई। सभा को ए.आई.डी. वाई.ओ. के इंचार्ज कॉ. विश्वजीत हारोडे ने संबोधित किया। कॉ. शत्रुहन वर्मा व साथियों द्वारा शहीद भगत सिंह के जीवन पर आधारित झलकियां प्रस्तुत की गई।

कॉ. विश्वजीत हारोडे ने कहा कि आजादी आंदोलन के महान क्रांतिकारियों के जीवन संघर्षों से प्रेरणा लेकर आज छात्र समुदाय को उन्नत संस्कृति, उन्नत चरित्र निर्माण कर, शोषणमुक्त समाज बनाने का सपना जो इन क्रांतिकारियों ने देखा था उसे पूरा करने के लिए छात्र-छात्राओं को वैज्ञानिक चिंतनधारा के आधार पर सुसंगठित होकर जोरदार छात्र आंदोलन निर्मित करना होगा। इस अवसर पर आत्मा राम साहू, देवेन्द्र पाटिल, नीरज यादव, नीतू साहू, पूजा सागर, पूनम नायक, हेमिन साहू, भूनेश्वरी साहू मोहनीश सिंह राजपूत, आकाश राना, लक्की, दीनदयाल साहू व अनिता साहू उपस्थित थे। क्रांतिकारी नारों के साथ सभा का समापन हुआ।

मेडिकल कैम्प आयोजित

नई दिल्ली : मेडिकल सर्विस सेण्टर (एमएससी)की दिल्ली इकाई द्वारा 29 सितम्बर को शालीमारबाग में आउटर रिंग रोड़, प्रेमबाड़ी पुल के पास झुग्गी बस्ती में एक मेडिकल कैम्प लगाया गया। इसमें लगभग 130 मरीजों का इलाज किया गया। एआईडीवाईओ की दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्रकाश सैनी, कैम्प की मुख्य आयोजक थी। ऑल इण्डिया एमएसएस की नीतू खन्ना भी उपस्थित रही। एमएससी की ओर से सिस्टर कौशल्या, हरिमोहन और समाजसेविका गुडिया ने अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान की। एमएससी के केन्द्रीय कमेटी सदस्य डॉ. जे एन मुर्मू ने मरीजों की चिकित्सा की।

एआईयूटीयूसी का झज्जर जिला सम्मेलन

बहादुरगढ़ (हरियाणा): ऑल इण्डिया यूनाइटिड ट्रेड यूनियन सेन्टर (एआईयूटीयूसी) का झज्जर जिला सम्मेलन 8 सितम्बर को यहां ब्रिगेडियर होशियार सिह स्टेडियम में सम्पन्न हुआ। इसमें आशा वर्करों, मिड डे मील वर्करों, आंगनवाड़ी हैल्परों व वर्करों और मजदूर-कर्मचारियों के सैकड़ों प्रतिनिधियों ने शिरकत की। सम्मेलन की अध्यक्षता कॉमरेड कपिल प्रसाद ने की। मंच संचालन कॉ. रामबड़ाई ने किया। एआईयूटीयूसी के सचिव मण्डल सदस्य कॉमरेड सत्यवान ने मुख्य वक्ता के तौर पर सम्मेलन को सम्बोधित किया। सम्मेलन में कॉ. लालजी द्वारा पेश किया गया मूल प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ। सम्मेलन में सर्वसम्मति से कॉ. कपिल प्रसाद की अध्यक्षता में जिला कमेटी का भी गठन किया गया।

कॉ. असित भट्टाचार्य का भाषण...

(पृष्ठ 4 का शेष)

अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय परिस्थिति फिलहाल हम देख रहे हैं वह संदेहातीत रूप से कॉमरेड शिवदास घोष के विश्लेषण की सत्यता को साबित करती है।

लोगों के साथ विश्वासघात क्यों हुआ?

कॉमरेड शिवदास घोष ने बार-बार लेनिन की अमूल्य शिक्षाओं को याद दिलाया था कि एक क्रान्तिकारी पार्टी के बिना क्रान्ति नहीं हो सकती है और एक सही क्रान्तिकारी सिद्धान्त के बिना एक क्रान्तिकारी पार्टी का निर्माण असम्भव है। इसके आधार पर कॉमरेड शिवदास घोष ने बार-बार जोर दिया था कि जाति, पंथ, धर्म और सम्प्रदाय का भेदभाव किए बिना लोगों का न्यायसंगत संयुक्त आन्दोलन गठित करने के लिए पहले सही नेतृत्व को जन्म देना जरूरी है। आज ऐसा एक नेतृत्व मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारधारा के आधार पर ही पनप सकता है। कॉमरेड असित भट्टाचार्य ने जोर देकर कहा कि मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्टालिन और माओ त्से तुंग के नेतृत्व में एक सही कम्युनिस्ट पार्टी के निर्माण का काम विभिन्न देशों में तीव्र गति से बढ़ रहा था। आम लोगों को एकजुट करने के क्रम का अनुसरण करते हुए 1917 में रूस में और 1949 में चीन में सर्वहारा की क्रान्ति को अंजाम दिया गया। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद पूर्वी यूरोप के कुछ देशों में समाजवाद स्थापित हुआ था। आप जानते हैं कि महान नेता स्टालिन की मृत्यु के बाद और तत्पश्चात् पहले सोवियत यूनियन में, फिर पूर्वी यूरोप और अंतत: चीन में भी राजसत्ता पर आधुनिक संशोधनवादियों का नियंत्रण कायम हो गया। विश्व पैमाने पर बहुत से देशों में कम्युनिस्ट पार्टियाँ आधुनिक संशोधनवाद के बहाव में बह गई। जनआन्दोलन और वर्ग संघर्ष पिछड़ने लगा। इसके विनाशकारी परिणाम के रूप में सोवियत यूनियन, पूर्वी यूरोप और अंतत: चीन में समाजवादी व्यवस्था ढह गई और प्रतिक्रान्ति के जरिए वहाँ पूँजीवाद पुन: स्थापित हो गया। बहुत पहले कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया था कि यदि गहन सैद्धान्तिक आन्दोलन, पार्टी के तमाम नेता-कार्यकर्ताओं के बीच सारगर्भित आदान-प्रदान के जरिए कम्युनिस्ट चेतना के स्तर को निरन्तर ऊँचा नहीं उठाया गया, यदि चेतना के ऊँचे मान को हासिल करते हुए चरित्र नहीं बदला गया तो आज के युग के मरणासन्न पूँजीवाद की बुर्जुआ बुराइयाँ जैसे बुर्जुआ व्यक्तिवाद और अर्थवाद कम्युनिस्ट आन्दोलन की जड़ों पर प्रहार करेगा। आज विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन में यही हो रहा है। यही वजह है कि देश-देश में क्रान्ति के लिए सहायक वस्तुगत परिस्थितियाँ हालांकि मौजूद हैं, फिर भी क्रान्ति दूर है। अधिकतर देशों में आधुनिक संशोधनवादी, सुधारवादी ताकतों को पूरी तरह परास्त और समाप्त करते हुए पूरी शक्ति और जज्बे के साथ असल क्रान्तिकारी नेतृत्व का उभरना अभी बाकी है।

बुर्जुआ संसदीय चुनाव का झांसा

कॉमरेड भट्टाचार्य ने कहा कि इस स्थिति का पूँजीपति वर्ग पूरा-पूरा फायदा उठा रहा है। बहुत चालाकी से वे लोगों को चुनावी भ्रम जाल में उलझा रहे हैं और इस प्रकार उन्हें पूँजीवाद की घेराबन्दी तक महदूद रख रहे है। पूँजीपति वर्ग के एजेण्ट और उनके भाड़े के बुद्धिजीवी निरन्तर प्रचार चला रहे हैं कि चुनावों के माध्यम से सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। इन चुनावों का चेहरा आज क्या है? मैंने मूलभूत मार्क्सवादी शिक्षाओं का पहले ही जिक्र किया है कि चुनावों के माध्यम से सरकार बदल सकती है लेकिन पूँजीवादी व्यवस्ता को छुआ तक नहीं जा सकता है। यह एक अकाट्य सत्य है। लोगों को यह सच्चाई समझाने की जरूरत है; उनके सामने इसकी व्याख्या करनी होगी। चुनाव के जरिए आप मौजूदा एमपी या एमएलए को हरा सकते हैं उसकी जगह कोई दूसरा चुन सकते हैं या सरकार भी बदल सकते हैं लेकिन स्थाई सर्वशक्तिमान भाड़े की सेना, अफसरशाही और न्यायपालिका द्वारा पृष्ठपोषित मौजूदा पूँजीवादी व्यवस्था को हटाना या उखाड़ फैंकना असंभव है। फलस्वरूप पूँजीपति वर्ग के शासन-शोषण से खुद को मुक्त करना लोगों के लिए असंभव बना दिया जाता है, जो शासन-शोषण आये दिन अधिकाधिक असहनीय, अधिकाधिक दमघोटू होता जा रहा है। एक नगण्य सचेत अल्पसंख्या को छोड़ कर एक ऐसा वोटर मिलना मुश्किल है जो जाति-पंथ-धर्म के प्रभाव से मुक्त हो या तुच्छ फौरी लाभ की गणना और व्यक्तिगत स्वार्थ से प्रेरित न हो। इस चुनावी समर में धन अति अभेद्य हथियार बन गया है। पूँजीपतियों से प्राप्त करोड़ों करोड़ रुपयों से लैस उनकी एजेण्ट पार्टियों के साथ-साथ मार्क्सवाद का चोगा धारण किए हुए सीपीआई, सीपीआई(एम) जैसी पार्टियाँ चुनावी संग्राम में उतरती हैं। 60-70 वर्ष पहले चुनावों को केन्द्र कर सिद्धान्तों, विचारधारा और प्रोग्रामों पर जो कुछ थोड़ी चर्चा-बहस हुआ करती थी आज उसका लेशमात्र भी नहीं बचा है। कॉमरेड भट्टाचार्य ने कहा: चिन्तनशील व्यक्ति सोच रहे हैं कि इस तरह गुलाम बना कर रखे गए उत्पीड़ित लोग क्या क्रान्ति के लिए उठ खड़े हो सकेंगे? स्पष्ट रूप से चिन्तनशील मनों में पैदा हुई गहरी चिन्ता का ही यह प्रतिबिम्ब है। पहली चीज हमें उन्हें स्मरण करानी है कि असल में एक महान ऐतिहासिक मिशन को निभाने में किसी को धैर्य और भरोसा नहीं खोना चाहिए। इसके साथ-साथ सत्य अनम्य ताकत के साथ मौजूद है और अंतत: सत्य ही है जो अजेय है। हालांकि चीन में लोगों को दबाए रखने के लिए उन्हें अफीम का आदी बना दिया गया था लेकिन अंतत: वहाँ क्रान्ति की अग्रगति को रोका नहीं जा सका। आप जानते हैं थीसिस के साथ-साथ अदम्य शक्तिशाली इसकी एण्टी थीसिस भी रहती है। मौजूदा हालात के खिलाफ ज्यों-ज्यों एसयूसीआई(सी) विकसित हो रही है और खुद को सुदृढ़ कर रही है, त्यों-त्यों एक उच्च, स्वस्थ उदात्त संघर्ष की भावना भी बढ़ रही है। लोग अधिकाधिक संख्या में पार्टी के साथ जुड़ रहे हैं और उच्च गुणों को हासिल कर रहे हैं। पूँजीवाद और इसकी पसन्दीदा पार्टियों ने लोगों के जीवन को असहनीय बना दिया है। लेकिन वे हमारे ही पूर्वज थे जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद को इस देश से बाहर खदेड़ दिया था और इसे आजाद कराया था। यह उन्होंने चुनावों के माध्यम से नहीं बल्कि अडिग जुझारू-संघर्ष के जरिए किया था। इसलिए हमें समझना चाहिए कि आम आदमी पूँजीपतियों के झांसे का शिकार हो रहा है क्योंकि वे उच्च विचारधारा और नीति-नैतिकता के सम्पर्क में नहीं आ रहे हैं। आपने नोट किया होगा कि इसी वजह से पूँजीपति वर्ग हर घड़ी निकृष्ट किस्म का व्यक्तिवाद और व्यक्तिस्वार्थ पैदा कर रहा है। वे लोगों के मानवीय गुणों को तबाह करने और उन्हें पैसे का दास बना देने का जीतोड़ प्रयास कर रहे हैं। इसके खिलाफ क्रान्तिकारी विचारधारा और संस्कृति का ज्वार पैदा करना निहायत जरूरी है। लोगों को गलत विचारों से मुक्त करना है, उन्हें गुमराह होने से बचाना है। केवल तभी बदलाव लाया जा सकता है। साथ ही साथ, कॉमरेड शिवदास घोष द्वारा लोगों को चुनाव के भ्रमजाल से मुक्त करने के लिए चलाए गए आजीवन संघर्ष को हम क्रान्तिकारी पार्टी के नेता-कार्यकर्ताओं को सामने रखना है, जो संघर्ष उन्होंने विभिन्न पहलुओं से उन्हें समझाते हुए और व्याख्या करते हुए तथा इस प्रकार लोगों को सचेत करते हुए उनकी हजारों भ्रान्तियों को दूर करने के लिए अपनी पूरी शक्ति और योग्यता के साथ हर दिन चलाया था। इन शिक्षाओं की रोशनी में अपनी पूरी शक्ति के साथ और वांछित सही प्रक्रिया का अनुसरण करते हुए हमें खुद को इस संघर्ष में लगाये रखना है।

लोगों को बांटने का बुर्जुआ षड़यन्त्र

कॉमरेड भट्टाचार्य ने कहा: आप जानते हैं कि 2014 के लोकसभा चुनाव में लाभ बटोरने के मकसद से कांग्रेस ने एक जन आन्दोलन की परिणति में भाषागत आधार पर जो तेलगू भाषी संयुक्त आन्ध्र प्रदेश बना था उसे विभाजित करके अलग तेलंगाना राज्य की मांग मान ली है और इसके जरिए देश भर में अलगाववादी आन्दोलनों की बाढ़ ला दी है। इन विभाजनकारी आन्दोलनों ने न केवल आसाम में बल्कि यूपी, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल आदि सहित विभिन्न अन्य राज्यों में भी खतरनाक आयाम अख्तियार कर लिया है। आम लोगों के दो तबकों के बीच संघर्ष आसन्न खतरे के रूप में प्रकट हो रहा है। हमने बार-बार बताया है कि ऐसी स्थिति में जहाँ पूँजीपति वर्ग का शासन और शोषण आम लोगों की तमाम समस्याओं और दुख-तकलीफों का मूल कारण हैं वहाँ इस व्यवस्था को बरकरार रखते हुए एक नए राज्य का निर्माण लोगों के जीवन और आजीविका की मूल समस्याओं में कोई परिवर्तन नहीं ला सकता। बल्कि ये राज्य और भी शोषण, अन्याय और दमन के हथियार बनने जा रहे हैं, क्योंकि धनाढ्य लोगों की एक नई जमात वहाँ पनप उठेगी। वे जन सम्पदा को ज्यादा से ज्यादा हड़पना शुरू कर देंगे। मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड या निकट अतीत में गठित उत्तराखण्ड, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में लोगों के जीवन की किन समस्याओं का समाधान हो सका है? पाकिस्तान के लोगों का जिन्ना के सिद्धान्त से मोहभंग हो गया है कि धर्मीय आधार पर पाकिस्तान का गठन मुसलमानों की तमाम समस्याओं का समाधान कर देगा; हालांकि इस नतीजे पर पहुँचने के लिए उन्हें कुछ वक्त लगा। पूर्वी पाकिस्तान अब बांग्लादेश बन गया है; खुद पश्चिमी पाकिस्तान में अलगाववाद और क्षेत्रीयतावाद ने खतरनाक रूप धारण कर लिया है। आसाम के लोगों को भी खुद को ऐसी अलगाववादी और विछिन्नतावादी मानसिकता से मुक्त करने की जरूरत है। इसके लिए मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तनधारा के आधार पर सही वामपंथी नजरिया पैदा करने की जरूरत है। आसाम का प्रत्येक व्यक्ति प्रेरित किया जाना चाहिए। लेकिन एसयूसीआई(सी) के सिवा दूसरी कोई भी पार्टी इस नजरिए को पनपाने के लिए सैद्धान्तिक संघर्ष में नहीं लगी हुई है। अन्य कौन-सी पार्टी है जो साहस और मजबूती के साथ घोषित कर रही है कि वह आसाम का और विभाजन नहीं होने देगी, जो कहती हो कि वह इसका विभाजन नहीं चाहती है, अलगाववाद नहीं चाहती है, मेहनतकश लोगों की एकता चाहती है? और कौन हैं जो आसाम को एकजुट रखने की घोषणा कर रहा है? और सिर्फ घोषणा करने से ही काम नहीं चलेगा। एकजुटता कायम करने और बरकरार रखने की सही प्रक्रिया, सही पद्धति क्या होनी चाहिए? महान साहित्यकार शरत्चन्द्र ने एक बार कहा था: सिर्फ इच्छा और हार्दिक भावना से महान कार्य नहीं हो जाते हैं। इसके लिए सही पद्धति का अनुसरण करना पड़ता है। आसाम में आज निहायत ही जरूरी है कि जाति-धर्म-सम्प्रदाय-नस्ल आदि का भेदभाव किए बिना शोषित लोगों के तमाम तबकों की एकता कायम करने के लिए उच्च नीति-नैतिकता के आधार पर दीर्घस्थाई जनआन्दोलन का निर्माण किया जाए ताकि उनके जीवन की ज्वलंत समस्याओं का समाधान किया जा सके। और इस आन्दोलन के दौरान जरूरत है तमाम जातियों, धर्मों, भाषाभाषी या नस्लों की शोषित जनता में एकता और भाईचारे की नई भावना का संचार किया जाए ताकि उनमें राजनीतिक चेतना, वर्ग चेतना को जन्म दिया जा सके।

सशक्त जनवादी आन्दोलन निर्माण करने का आह्वान

कॉमरेड भट्टाचार्य ने यह कहते हुए समापन किया: इस संदर्भ में कॉमरेड शिवदास घोष की अति महत्वपूर्ण शिक्षा है कि उच्च नीति-नैतिकता के आधार पर जनवादी आन्दोलन विकसित होना चाहिए। इस प्रक्रिया के माध्यम से ही क्रान्तिकारी उत्थान की जमीन को तैयार किया जा सकता है और तब एक दिन पूँजीवाद विरोधी समाजवादी क्रान्ति को अंजाम दिया जा सकेगा। जो तनावपूर्ण स्थिति फिलहाल आसाम में बनी हुई है यह भी धीरे-धीरे बदल जाएगी। यदि मार्क्सवाद-लेनिनवाद की नई समझदारी और कॉमरेड शिवदास घोष की चिन्तनधारा के आधार पर यहाँ सही मार्क्सवादी आन्दोलन विकसित और मजबूत किया जाए, यदि शोषित लोगों के तमाम तबकों को सही वामपंथी विचारधारा और नजरिए से लैस किया जाए। इसलिए आसाम के मेहनतकश लोगों और विशेषकर राज्य के चिन्तनशील लोगों के तबके से हमारी अपील है कि इस ऐतिहासिक जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए आगे आएं। ●●●

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly, Date of Printing :5 Oct, 2013

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जयंती पर महिला सम्मेलन

नई दिल्ली : महिलाओं पर बढ़ रहे अपराध के खिलाफ 26 सितम्बर को भारत के पुनर्जागरण काल के मनीषी एवं महिला मुक्ति आन्दोलन के प्रणेता ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जयंती के अवसर पर साकेत इलाके में एक महिला सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन स्थल पर ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की उद्धरण प्रदर्शनी भी लगाई गई। सम्मेलन में इलाके की काफी महिलाओं ने भाग लिया।

सम्मेलन में मुख्य वक्ता थे एसयूसीआई(सी) के दिल्ली राज्य कमेटी सदस्य कॉ. संजय तिवारी। इनके अलावा एआईएमएसएस की दिल्ली राज्य सचिव कॉ. रितु कौशिक, उपाध्यक्ष सीता सिंह, बासमती देवी व लीला त्यागी ने भी सम्बोधित किया। सम्मेलन की अध्यक्षता स्मिता सिंह ने की।

वक्ताओं ने वर्तमान समय में महिलाओं पर बढ़ रहे अत्याचार व अपराध पर चिंता जताते हुए कहा कि आज इस बात से हर विवेकशील इन्सान दुःखी है। समाज में सांस्कृतिक-नैतिक पतन अपने चरम पर पहुंच गया है। इसका प्रमुख कारण है टीवी, इन्टरनेट, सौन्दर्य प्रतियोगिताओं के माध्यम से परोसी जा रही अश्लीलता और हिंसा लोगों, खासकर किशोरों की पशु प्रवृत्तियों को उकसा रही है और उन्हें अपराधी और असामाजिक तत्व बनने की ओर धकेल रही है। इसके अलावा शराबखोरी व नशीले पदार्थों के बेरोकटोक चलन ने भी महिलाओं पर हो रहे अपराध को और अधिक बढ़ावा दिया है। वक्ताओं ने कहा कि आज नवजागरण काल के मनीषियों की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए और भी उन्नत स्तर की संस्कृति व नैतिकता के आधार पर सांस्कृतिक-सामाजिक आन्दोलन गठित करने की जरूरत है। समाज में महिलाओं पर बढ़ रहे अत्याचार व अपराध के खिलाफ आन्दोलन में छात्र-नौजवानों, खासकर महिलाओं से हिस्सा लेने की वक्ताओं ने अपील की।

साम्प्रदायिक सौ

इलाहाबाद : 22 सितम्बर को महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी महाविद्यालय के क्षेत्रीय केन्द्र में साम्प्रदायिक सौहार्द समिति के द्वारा एकता व भाईचारे को मजबूत करने के लिए एक नागरिक सम्मेलन किया गया।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि, पद्म श्री सम्मान से सम्मानित, जाने माने साहित्यकार, कवि, आलोचक, उपन्यासकार श्री शमशुर्रहमान फारुखी ने कहा कि साम्प्रदायिक ताकतें इतनी तेजी से अपना सिर उठाने में इसलिए सफल होती जा रही हैं क्योंकि हम सब अपने-अपने व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर नहीं उठ पा रहे हैं। सब कुछ चुपचाप सहते रहते हैं। यही वजह है कि जनवादी और प्रगतिशील ताकतें लगातार कमजोर होती जा रही हैं। वक्ता के तौर पर साम्प्रदायिक सौहार्द समिति के संयोजक डॉ. सुधांशु कुमार मालवीय ने अपनी बात रखते हुए कहा कि आजादी के बाद धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा कभी पनप ही नहीं पाई।

धर्मनिरपेक्ष देश की बजाय भारत बहुधर्मी देश बन कर रह गया है। सम्मेलन की अध्यक्षता वरिष्ठ समाजसेवी व स्वतंत्रता सेनानी श्री जिया उल हक ने की। सम्मेलन के अंत में समाजसेवी व उच्च न्यायालय के अधिवक्ता श्री राजवेन्द्र सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया और संचालन सुश्री झरना मालवीय ने किया। सभा में डॉ. संतोष भदौरिया, शिक्षक कमलेश सिंह ने भी बात रखी।

नागरिक सम्मेलन की तरफ से पेश किये गये प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित किया गया। प्रशासन और सरकार की शिथिलता और संवेदनहीनता व धर्म, जातपात, इलाका परस्ती के आधार पर लोगों को बांटने और आपस में लड़ाने वाले सत्तालालुप राजनीतिक दलों की भूमिका की सर्वसम्मति से निन्दा की गई और लोगों से अपील की गई कि सभी सुधीजन साम्प्रायिक सौहार्द को मजबूत बनाने के लिए आगे आयें और राज्य सरकार से मांग की गई कि मुजफ्फरनगर दंगों की पुनरावर्ती न हो यह सुनिश्चित करें। सभा में डॉ. आर बी एल श्रीवास्तव, डॉ. मानवेन्द्र बेरा, नंद लाल गुप्ता, रामयश, घनश्याम मौर्य, प्रो. अनीता गोपेश, अविनाश पाण्डेय, श्री आलोक दूबे, ए पी सिंह आदि अनेक बुद्धिजीवी व सैकड़ों छात्र-नौजवान शामिल हुए। इससे पहले शहर के अनेक बुद्धिजीवियों की ओर से एक अपील प्रकाशित की गई जिसे इलाहाबाद विश्वविद्यालय सहित शहर के कई इलाकों में बांटा गया।

रेवेन्शा में अनिश्चित काल के लिए चुनाव टाले जाने के खिलाफ एआईडीएसओ ने मनाया काला दिवस

कटक : रेवेन्शा यूनिवर्सिटी में प्रायोजित अनिश्चित काल के लिए चुनाव टाले जाने के खिलाफ ऑल इण्डिया स्टूडेण्ट्स ऑर्गेनाइजेशन (एआईडीएसओ) के नेतृत्व में छात्रों ने 29 सितम्बर को काला दिवस मनाया। छात्र संगठन ने सरकार और प्रशासन से आदेश तुरन्त वापस लेने, शरारती तत्वों से निपटने के लिए आवश्यक कड़े कदम उठाने और चुनाव प्रक्रिया तुरन्त शुरू करने की मांग की।

इससे पहले 20 सितम्बर को रेवेन्शा यूनिवर्सिटी अथोरिटियों ने कैम्पस में गड़बड़ी के बहाने छात्र यूनियन का चुनाव स्थगित करने का ऐलान कर दिया था। यह भी ऐलान कर दिया गया था कि कैम्पस में सौहार्दपूर्ण माहौल बहाल होने पर ही चुनाव कराये जा सकते हैं। लेकिन छात्र-विरोधी कुछ ताकतों के द्वारा गड़बड़ी पैदा करने के प्रयासों के बावजूद अथोरिटियों के दावे के उलट कैम्पस शान्तिपूर्ण बना रहा। 27 सितम्बर को सरकार और शासक पार्टी के द्वारा उच्च स्तर पर रची गई साजिश के तहत कुछ गुण्डों व गैर छात्रों ने चुनाव रद्द करवाने के लिए जमीन तैयार करने के लिए स्टाफ के सामने कैम्पस में गड़बड़ी मचाने की कोशिश की। लेकिन हैरानी की बात है कि अथोरिटियों ने मुट्ठीभर गुण्डों और गैर छात्रों की अंधेरगर्दी को रोकने के लिए कोई कदम नहीं उठाया जिससे उनके हौंसले बढ़ गये। छात्र नेताओं ने कहा कि शासक पार्टी की शह पाये हुए गुण्डों के प्रति असामान्य तौर पर 'नरम' रवैया अख्तियार करके अथोरिटियों ने स्थिति को बिगड़ने दिया और ऐसी दुखद स्थिति तक पहुंचा दिया। एआईडीएसओ और शिक्षाप्रेमी लोगों के

बार-बार अनुरोध के बावजूद असल में कैम्पस में अनुशासनहीनता को शुरूआत में ही सख्ती से दबा देने के लिए सालों से कुछ नहीं किया गया। लेकिन बड़ी हैरतअंगेज बात है कि सरकार और शासक पार्टी की मिलीभगत से अथोरिटियों ने छात्र यूनियन के चुनाव रद्द कर दिये। जब छात्रों ने अथोरिटियों के इस अलोकतांत्रिक फैसले का प्रतिवाद किया तो अनिश्चित काल के लिए चुनाव टाल दिये गये। इससे साफ जाहिर है कि यह शासक पार्टी द्वारा प्रायोजित है।

अथोरिटियों के इस अलोकतांत्रिक कदम के नतीजतन छात्रों को अपने प्रतिनिधि चुनने के उनके बड़े कष्टों से अर्जित और गैर सौदेबाजीलायक अधिकार से वंचित कर दिया जाएगा। इसके अलावा अपने कॅरियर के बारे में भी छात्रों को काफी नुकसान उठाना पड़ेगा। जिस तरह शासक पार्टी के फरमान के आगे रेवेन्शा की अथोरिटियों ने घुटने टेके हैं इससे साफ जाहिर है कि इस प्रमुख संस्थान की स्वायतता खतरे में है।

उपरोक्त मांगों को लेकर और अथोरिटियों के इस अलोकतांत्रिक फैसले के खिलाफ धरना जारी रहेगा। एआईडीएसओ पूर्व छात्र नेताओं, बुद्धिजीवियों और शिक्षाप्रेमी लोगों को शामिल करके विरोध प्रदर्शनों, नुक्कड़ सभाओं और सम्मेलनों के जरिये जनमत तैयार करेगा। अगर रेवेन्शा अथोरिटियाँ इन मांगों को मानने के लिए नहीं झुकी तो एआईडीएसओ समानान्तर चुनाव करवायेगा।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष:011-25726631, Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com; sarvaharadrishtikon@yahoo.com